॥ श्री ॥

धवला

DHAVALAA

आ. वीरसेन · ९वीं शती · अभिलेख ३५/९०

श्री एलाचार्य स्वामी → **आ. वीरसेन** → श्री श्रीधराचार्य

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वीरसेन स्वामी कृत — षट्खण्डागम पर लगभग बहत्तर हज़ार श्लोक-प्रमाण की विशाल प्राकृत-संस्कृत मिश्रित टीका।

सिद्धान्त, गणित और इतिहास की दृष्टि से दिगम्बर वाङ्मय का महामेरु; मूडबिद्री की ताड़पत्रीय प्रतियों में सुरक्षित रही।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

धवला — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ३५ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वीरसेन; रचना-काल ९वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १४५) के अनुसार इनका समय ७७०–८२७ है तथा गुरु श्री एलाचार्य स्वामी। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "धवलाटीका आदि १,००,००० श्लोक प्रमाण टीका के कर्ता" उल्लिखित है। इसी लेखनी से महाधवला भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में आदिपुराण, महापुराण (उत्तरपुराण), जयधवला, आदिपुराण (संस्कृत पूर्ति), वर्धमानचरित्र, शांतिनाथपुराण परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

महाधवला

समकालीन ग्रन्थ

आदिपुराण · महापुराण (उत्तरपुराण) · जयधवला · आदिपुराण (संस्कृत पूर्ति) · वर्धमानचरित्र · शांतिनाथपुराण

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ३५ — मूल छायाचित्र

← महापुराण (उत्तरपुराण)

जयधवला →